

ताथ के पते की तरह^{१०} ढह रहा है विपक्ष

नोताश कुमार के पाला बदल लेने से विपक्षी दलों के बीच जो अराजकता और बेचैनी बढ़ी है, उसके जिम्मेदार वे स्वयं हैं। बेशक नीतीश कुमार का पाला बदलना अनैतिक हो सकता है, पर कांग्रेस की अगुआई वाले $\frac{1}{2}$ इडिया% गठबंधन ने इसे होने दिया। जून, 2023 से, जब $\frac{1}{2}$ इडिया% गठबंधन अस्तित्व में आया, कमेटी राज, कई शक्ति केंद्र, एक ही पार्टी को प्रमुखता और वंबाद की कमी ने इसका संकेत दे दिया था। यह भले अजीब लगे, लेकिन कुछ अस्पष्ट कारणों से कांग्रेस ने अपने ही पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरों को अधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनने या गठबंधन का अध्यक्ष बनने से इन्हें कर दिया। इसने एक क्षेत्रीय क्षत्रप को संयोजक के पद से विचित्र करने, गठबंधन की

स्थापना करने या नेतृत्व के मुद्दे का निपटान को सभावनाओं का खत्म कर दिया। इस तरह से, इस गड़बड़ी की जिम्मेदारी पूरी तरह से कांग्रेस और गांधी परिवार की है, खासकर राहुल गांधी की, जिन्होंने सीट समायोजन के लिए गठबंधन में आप सहमति बनाने के बजाय न्याय यात्रा को चुना। गांधी परिवार को अफसोस हो रहा होगा कि कैसे उन्होंने नीतीश को $\frac{1}{3}$ इडिया% गठबंधन का संयोजक बनाकर शांत करने का सुनहरा मौका गंवा दिया। सभी लोग जब नीतीश को संयोजक बनाने पर सहमत हो गए थे, तब राहुल ने कथित तौर पर तर्क दिया कि चूंकि ममता बनर्जी नहीं थीं, इसलिए उनकी सहमति ली जानी चाहिए। अगले दो सप्ताह तक राहुल इसे या तो भूल गए या नजर अंदाज करने का फैसला लिया। ममता के साथ कोई बातचीत नहीं हुई। अंततः निराश नीतीश ने भाजपा के साथ मिलने का फैसला किया। भाजपा की रणनीति 2024 के चुनाव में अपनी संभावनाओं को मजबूत करने से ज्यादा विपक्षी गठबंधन को लोकसभा सीटों से वर्चित करने से प्रेरित है। अब मई, 2024 के बाद की पटकथा लिखने की कोशिश हो रही है। जिसमें क्षेत्रीय दल कांग्रेस को दोषी ठहराने की योजना बना रहे हैं। कांग्रेस के भीतर भी राहुल के बफादार नेता खरोंगों को दोषी ठहराने में रुचि रखते हैं, जबकि कांग्रेस के भीतर आम तौर पर लोग राहुल के खिलाफ हैं। प्रियंका गांधी की अनुपस्थिति संकेत देती है कि 10 जनपथ के भीतर सब कुछ ठीक नहीं है। मई, 2024 के बाद कांग्रेस में औपचारिक विभाजन को खारिज नहीं किया जा सकता है। नीतीश कुमार के इस पालबदल से जहां विपक्षी प्रत्यारूप को ज्यादा दबाना चाहा है, उर्दू आपार्टी जोन-ए-एम ज़िले में शामिल रही

गठबंधन का तगड़ा झटका लाया है, वहां आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा का जीत की संभावनाएं और मजबूत हुई हैं। हालांकि हिंदी पांडी में भाजपा की स्थिति मजबूत है, पर पार्टी किसी तरह का जोखिम लेना नहीं चाहती थी। इसलिए नीतीश को अपने पाले में लाकर उसने कांग्रेस के नेतृत्व वाले 'झड़िया' गठबंधन की जो थोड़ी भी संभावना थी, उसे ध्वस्त कर दिया है। इसके अलावा, भाजपा लोकसभा चुनाव से ठीक पहले वह एक और राज्य में सत्ता में साझेदार बन गई है और जदयू के लिए राहत की बात है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर उसके नेता नीतीश कुमार ही बने हुए हैं। जब-जब भाजपा और जदयू ने मिलकर चुनाव लड़ा है, उसके नीतीजे अच्छे ही आए हैं। पिछली बार लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जदयू के साथ मिलकर बिहार की 40 में से 39 सीटों पर जीत हासिल की थी। राज्य में मुख्यमंत्री कौन बनेगा, उससे ज्यादा महत्वपूर्ण भाजपा के लिए लोकसभा चुनाव था। भाजपा की रणनीति है कि विपक्षी गठबंधन की एकता को झटका देकर कैसे उसे लोकसभा सीटों से बचत रखा जाए। पश्चिम बंगाल और पंजाब में पहले ही झड़िया गठबंधन में दरार पैदा हो गई है, हालांकि तृणमूल कांग्रेस और आप अभी झड़िया गठबंधन में बने हुए हैं विपक्षी एकता के बारे में कहना जितना आसान है, उतना करना नहीं। अतीत में कई ऐसे मौके आए हैं, जब विभिन्न दलों एवं विचारधाराओं के लोग 1977, 1989, 1996, और 2004 में एकजुट हुए। वर्ष 1977 में जब शक्तिशाली इंदिरा गांधी को पराजित किया गया था, तो विपक्षी जहाज को सहारा देने के लिए एक लंगर था। जयप्रकाश नारायण की पहल पर चार प्रमुख विपक्षी पार्टियां-कांग्रेस (ओ), जनसंघ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और भारतीय लोक दल 23 जनवरी, 1977 को एकजुट हुईं और जनता पार्टी बनाई। इसी तरह, 1989 में दक्षिणांगी और वामपंथी दल ने विश्वनाथ प्रताप सिंह के साथ राजीव गांधी को सरकार बनाने का मौका नहीं दिया, हालांकि कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। 2004 में भी जब अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा को कांग्रेस से कम सीटें मिलीं, तो वीपी सिंह और माकपा महासचिव हरकिशन सिंह सुरजीत ने क्षेत्रीय क्षत्रियों को पर्दे के पीछे से कांग्रेस के करीब लाने का काम किया। फिर यूपीए का गठन हुआ, जिसने दस वर्षों तक राज किया। इस तरह से युआ-निर्माण के हर मौके पर एकता के लिए मुश्किल से कुछ महीने काम किया गया। अब जबकि अप्रैल-मई में होने वाले चुनाव की उल्टी गिनती शुरू होने वाली है, विपक्ष ताश के पत्ते की तरह ढह रहा है। एक और बात है, जो विपक्षी खेमे को बांधे हुए है। अधिकांश विपक्षी नेतृ यह भी जानते हैं कि राहुल 2024 में प्रधानमंत्री नहीं बनना चाहते हैं।

कुछ अलग

कबीर जिए तो राजशाही में थे। पर शायद उन्होंने पन्द्रहवीं सदी में ही विश्व गुरु के लोकतंत्र का हाल देख लिया होगा। तभी अपने निर्बाण के लिए काशी छोड़ मगाहर चले गए थे। आजकल काशी में जीने का पता नहीं। पर चुनाव जीतने के लिए कुछ लोग काशी ज़रूर जाते हैं। दस साल पहले खाँसी बाले एक मफलर भाई झाड़ लेकर चुनाव लड़ने बनारस पहुँचे थे। लेकिन काशी ने कहा कि उसे सफाई पसन्द नहीं। उसका नारा है- 'रांड, साँड़, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचे तो पावे काशी।' इसलिए उसने नमो-नमो जपते हुए विश्व गुरु को भारी बहुमत से चुनाव जिता दिया। उन्होंने तमाम दावों के बावजूद काशी को भले अभी क्योटो न बनाया हो, पर वह देश को विश्व गुरु बनाने पर आमदा है। लेकिन विश्वगुरु की हालत देखकर लगता है कि अगर काशी, काशी ही रह जाए तो बेहतर है। काशी को नया स्वरूप प्रदान करने की कोशिश में सभी पुराने मंदिरों को जर्मांदोज़ करने के बाद ढेर बने उसके देवी-देवता पास में बहती गंगा में स्नान करने की बजाय गंदे नालों के पानी में डूबे नजर आए। ऐसे में पता नहीं कि अगर काशी क्योटो बनी तो राम जाने क्या होगा? पर काशी तो महाकाल की है। वहाँ राम का क्या काम? राम को अयोध्या में होना चाहिए। भले आत्मसंसाधनी राम को ब्रह्मांड के कण-कण में देखते हों, पर चुनावसंधानी उसे उँगली से पकड़ कर अयोध्या में ले आए हैं। कहते हैं काशी में मरने पर स्वर्ग मिलता है। इसलिए लोग मरने के लिए काशी पहुँच जाते हैं। विश्व गुरु के राम राज्य में अपनी आर्थिक स्थिति से परेशान आंध्र प्रदेश के एक दम्पति ने पिछले दिनों अपने दो युवा बच्चों के साथ काशी में आत्महत्या कर ली। जीते जी राम राज्य के तमाम सुख भोगने के बाद यह दम्पति इतना लालची हो गया था कि सरकार द्वारा दिए जा रहे पाँच राशन को महीने खाने के बारे में लेकिन उसके बलिदान सभी अंधभक्तों के लिए स्वर्ग रास्ते खोल दिए हैं, जो अपने जीवन होने के बावजूद एक हजार रुड़ीज़ल-पटोल और रसोई गैस के पाँच हजार में खरीदने की बात बात सही भी है। अगर उनका देश और औद्योगिक उत्पादन में गिरावट के बाद भी देश को पाँच ट्रिलियन कॉर्नमी बनाने की बात कर सकते हैं अंधभक्त भी जेब में टमझी न बावजूद हजार रुपये लीटर तेल सिलेंडर पांच हजार में खरीदने व कर ही सकते हैं। जब फैक्ना ही से और दूर तक फैक्ना चाहिए अपना है और मछली भी। फिर समुद्र से बड़ा हो जाए या मछली चुनावी रैलियों में दोनों हाथ कैलां और मछली का साहज ही तो तो अंधभक्त तो तालियाँ बजाएंगे व ने शायद अपने समय में पंडे बकहा होगा कि माथ तिलक ह बानाए लोगन राम खिलौना जान अब तो राम से पंडे और नेत विधिमयों ने भी खेलना शुरू कर कुछ दिन पहले मेरे एक ने बीड़ियों भेजा था, जिसमें कुछ लड़कियाँ बड़े सुन्दर स्वर में राम का गायन कर रही थीं। पर मैं बरकरार हूँ। तुलसी बाबा ने वे भय बिनु होए न प्रीति। मैं सोच यह लड़कियाँ डर के मारे राम राम राम रही थीं या प्रेमवश। हालांकि दावा कर रहे थे कि यह सब विश्व ओजस्वी और कुशल नेतृत्व के संभव हो पाया है कि अब नीत्रीराम बोलेने लगे हैं।

दुनिया के एक महत्वपूर्ण मंच, वल्ड इकनॉमिक फोरम, का सम्मेलन डावोस (स्विट्जरलैंड) में सम्पन्न हुआ

अमीरों का वल्लभ है वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम

डा. अश्विनी महाजन

जनवरी 15 से 19 के बीच दुनिया के एक महत्वपूर्ण मंच, वल्ड इकानॉमिक फोरम, का सम्मेलन दावोस (स्विटज़रलैंड) में सम्पन्न हआ। वर्ष 1971 में अस्तित्व

वर्ष 1971 में अस्तित्व में आया वल्ड इक्नार्मिक फोरम, पिछले लगभग 53 साल से वैश्विक आर्थिक संरचना पर चर्चा करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था के नाते उभरा है। व्यापार, भू-राजनीति, सुरक्षा, सहकार, ऊर्जा से लेकर पर्यावरण और प्रकृति समेत अनेकानेक मुद्दों पर इस मंच पर चर्चा होती रही है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बड़ी हस्तियों ने डावोंस के इस सम्मेलन में भाग लिया। 60 देशों के शासनाध्यक्षों के अलावा बड़ी कंपनियों के प्रतिनिधि, राजनेता, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रमुख और अनेकानेक आर्थिक जगत के प्रमुख महानाभाव इस सम्मेलन में आयोजित बैठकों और गोष्ठियों में दिखे। 1000 बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पोषित यह मंच, अपने सम्मेलनों में भाग लेने वालों से मोटी रकम फीस के रूप में लेता है। यानी किसी भी तरह से यह सर्वसमावेशी मंच तो नहीं कहा जा सकता। समाज में कम भाग्यशाली लोगों की ओर से बोलने वालों में से शायद कोई यहां नहीं पहुंच पाता। यह मंच दुनिया की उन विशालकाय कंपनियों की दुनिया का ही मंच कहा जा सकता है जिनके पैसे से इसका काम चलता है, क्योंकि इसमें दुनिया के सामान्य जन के हित साधनें जैसी कोई बात नहीं होती। यदि वर्ष 2024 के ही डावोंस में आयोजित वल्ड इक्नार्मिक फोरम का बात करें तो देखते हैं कि 5 दिन तक चलने वाले इस सम्मेलन में जिन मुद्दों पर चर्चा हुईं उनका सामान्यजन से कोई खास सरोकार दिखाई नहीं देता। उदाहरण के लिए एक सत्र में इस बात पर चर्चा होती है कि दुनिया में व्यापार और निवेश तथाकथित रूप से कुशल साझेदारी के स्थान पर मित्रता के आधार पर हो रहा है या रूस-यूक्रेन संघर्ष, इजराइल-हमास युद्ध आदि स्थितियां इस कंपनियों के लिए इसलिए शुभ नहीं हैं, क्योंकि इनके कारण उनके निवेश प्रभावित हो रहे हैं, जिनके कारण उनमें चिंता व्याप रही है। वल्ड इक्नार्मिक फोरम के इस मंच पर जिन 60 शासनाध्यक्षों ने भाग लिया वे सभी वैश्विक भू-राजनीति में उथल-पुथल, देशों के बीच बढ़ती वैमनस्यता और युद्ध के

काण

ੴ ਸਤਿਗੁਰ

ਬਡੇ ਵਿਜਨ ਕੇ ਰੰਗ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ ਥੇ ਡਾ. ਕੈਲਾਂਸ

खालद शारकन कहाह, विषुडा कुछ इस जदा
से कि रुठ ही बदल गई। इक शख्स सारे
शहर को वीरान कर गया।' 20 जनवरी 2024 की सुबह 5 बजे
दा, कैलाश आहलवालिया सहित्य और रंगमंच की दुनियाएँ
को वीरान करके चलेग। हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली
और वॉर्म्ड तक उनके देहावसान की खबर से सन्नाठा पसरा
गया। शोकग्रस्त नामी गिरामी दोस्तों, रंगमंच, फिल्म और
लेखकों की हस्तियों को जैसे यकीन ही नहीं हो रहा था।
उत्तरायण काल में उन्होंने नशवर देह का त्याग कर दिया और
हंस अकेला अनंत उड़ान भर गया था। 30 जनवरी 1937 को
डा। कैलाश का जन्म कांगड़ा जिले के डुहक गांव में हुआ था।
बचपन के दौरान उनका गांव विकास की बलिवेदी पर चढ़ा
दिया गया था। पौंग बांध के निर्माण में उनका गांव भी अधिग्रहण
की चपेट में आया और देखते ही देखते उनका गांव पौंग बांध में
समा गया। विस्थापन की इस टीस को उनकी अंग्रेजी में लिखी
एक पुस्तक 'बैरेज आफ मेमोरीज' (एन आटोबोयोग्राफी
आफ पौंग डैम आउस्टीज) और अन्य रचनाओं यथा
कहनियों व कविताओं में देखी जा सकती है। एक बार उन्होंने
जिक्र किया कि जब पौंग बांध बाहर और उनका गांव जलमान
हुआ तब ऐसा लगा कि गांव ढूबा ही नहीं, पर जितना पानी भरा
गया उतना तो हमारी आँखों से बह गया था। प्रारम्भिक शिक्षा
ग्रहण करने के उपरान्त उनका परिवार चंडीगढ़ आ गया था।

पढ़ाइ के साथ तरुण कलाश न चड़ागढ़ के साहार्पन संस्कृतिक माहौल में दस्तक देनी शुरू कर दी थी। 1954 पहली बार चंडीगढ़ में 'कोणार्क' नाटक खेला गया था जिसका निर्देशन डा. वीरेंद्र मेहदीरत्ना ने किया और और और नायक विकारी भूमिका डा. कैलाश ने निर्भासी थी। इस तरह उनको चंडीगढ़ हिंदी रंगमंच का प्रथम नायक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। नाटककार मोहन राकेश, रंग समीक्षक और कथाक वीरेंद्र मेहदीरत्ना और अनुलवीर अरोड़ा जैसे साथियों के साथ खूब बैठकें जमती थीं। बाद में युवा कैलाश को जब हिमाचल अध्यापन का कार्य मिला तो अपनी रंगमंचीय लेखनी अभिरुचियों के चलते मधुर व्यवहार से हिमाचल साहित्यिक माहौल को और रंगमंच को उन्होंने 35 वर्ष अधिक समय देकर खाद-पानी दिया। अध्यापन के अतिरिक्त उन्होंने हिमाचल के यूनिवर्सिटी और कॉलेज रंगमंच की देखती और दिशा संवारन में अन्यतम योगदान दिया। उनके संबंधी रंगकर्मियों में अनुपम खेर, विजय कश्यप, जवाहर कौल, देवेंद्र गुप्ता, ओमपाल, जॉली (अश्वनी सूद), जावेत आदि अतिरिक्त और भी रंगकर्मी ऊंचे मुकाम पर पहुंच गए हैं। वे भी उनके निर्देशन में कई नाटकों में अभिनय का मौका मिला था। वह मृदु भाषी और आहिस्ता से बोलने वाले प्राणी थे तथा बड़े ध्यानपूर्वक सुनना पड़ता था। वर्ष 1995 में हिमाचल प्रदेश क्रिएटिव राइट्स फोरम ने उनके योगदान पर बचत भव

म एक भव्य समाज का आवाजन करवाया। जिसका अध्यक्षता तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर भट्टद्वारा संस्थित कर रहे थे। कार्यक्रम में थोड़ा विलम्ब हो गया था। डा. कैलाश को सम्मानित करने के उपरांत जब डा. साहव बैठने लगे तो सीएम साहव से आशीर्वचन देने का अनुरोध आयोजकों ने किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज तो मैं डा. कैलाश आहलूवालिया से ही मिलने और उनको सुनने आया हूँ। आज आप बालेंग। डा. कैलाश के ओजस्वी लेखकीय वक्तव्य सुनने के उपरांत वीरभद्र जी इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि क्या ही अच्छा होता डा. कैलाश सेवानिवृत्ति के उपरांत शिमला में बैस जाते। इससे बड़ा सम्मान और क्या हो सकता था। हमारे जमाने में शिमला कालेज में उनके तीन सहकर्मियों- प्रोफेसर अनिल विल्सन, डा. कमल अवस्थी और प्रोफेसर सुनील शर्मा और डा. कैलाश आहलूवालिया साहित्य संस्कृति जगत में 'गैंग ऑफ़ फॉर' के नाम से जाना जाता था। यूथ फेरिंटिवल्स और अन्य प्रतियोगिताओं के लिए चारों मिल कर कर तैयारी करते, ताकि ड्रामा के निर्देशक डा. कैलाश चन्द्र अगर किसी काम से उपलब्ध नहीं तो रिहर्सल कार्यनिवृत्थ चलता रहे। डा. कैलाश बड़े विजन के डायरेक्टर थे। वो अपने जेहन में फहले ही तय कर लेते थे कि क्या और कैसे करना है। सबकी सुनते थे? यदि कोई सुझाव उनकी निर्देशकीय परिकल्पना/स्क्रीम में किट बैठता तो उसको यथोचित महत्व देते थे। कैसे और क्या करना है, कि उपरांत तो क्या करना है, तरुण अभिनेता को समझारे, पिंड देते थे। यही एक रण था कि फेरिंटिवल्स में अल्प आते निर्देशक होने के साथ साथ कविता संस्मरणकार भी रहे। बहुविध आहलूवालिया अंग्रेजी भाषा में करते थे। भारतीय इंग्लिश ले सम्मानजनक स्थान था। अंग्रेजी ध्यान आकृष्ट किया। उनकी कविता समीक्षाएं देश-विदेश की प्रतिक्रिया पर छपती रही और काव्य तथा साहित्य संसार समृद्ध हुआ। चित्रांग होने के कारण कुछ छोटा/बड़ा करने का कुस्तित प्रयत्न हो जाता है जो आपको और ऊर्जा प्रदान करते हैं। देवेन्द्र पहचान कर लेना सीखना चाहिए। वहना चाहता हूँ कि कैलाश चन्द्र रूप में समाने आता है। मात्र नोने में हो रहे नित नए बदलाव को कथावृत रचने में सफलता प्राप्त

लोगन राम खिलौना जाना

चीन पर अंकुश लगाने के लिए म्यांमार सीमा पर जरूरी है बाड़बंदी

म्यामार म चल रह गृहयुद्ध के कारण सामा-
पार से शरणार्थियों एवं विद्रोहियों

कारण सामा
वं विद्रोहियो

यांमार में उथल-पुथल और हिंसा के चलते बीते दिसंबर तक 6,000 से ज्यादा शरणार्थियों ने मणिपुर में शरण ली है और उन्हें राज्य सरकार द्वारा भौजन उपलब्ध कराया जा रहा है। यांमार के साथ मणिपुर 398 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है। बाड़ लगाने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 1970 में शुरू की गई मुक्त आवाजाही व्यवस्था (एफएमआर) खत्म हो जाएगी। लेकिन मुश्किल यह है कि मिजोरम के मुख्यमंत्री लालदुहोमा ने बाड़ लगाने का विरोध किया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विदेश मंत्री एस जयशंकर से इस संबंध में अनुरोध किया है।

म्यामार म चल रह गृहयुद्ध के कारण सामाजिक पार से शरणार्थियों एवं विद्रोहीयों को बांग्लादेश सीमा पर आमद के चलते भारत सरकार ने म्यामार सीमा पर बांग्लालगाने का फैसला किया है, ताकि बांग्लादेश सीमा की तरह मुक्त आवाजाही व्यवस्था खत्म को जाए। सितंबर, 2023 मे मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने केंद्रीय गृहमंत्री से संदीध तत्वों एवं शरणार्थियों की घुसपैठ रोकने का अनुरोध किया था। म्यामार मे उथल-पुथल और हिंसा के चलते बीते दिसंबर तक 6,000 से ज्यादा शरणार्थियों ने मणिपुर मे शरण ली है और उन्हें राज्य सरकार द्वारा भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। म्यामार के साथ मणिपुर 398 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है। बांग्लालगाने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 1970 मे शरू की गई मुक्त आवाजाही व्यवस्था

विकाससंत करने का ज़रूरत ह। एक फरवरा, 2021 में जब म्यामार में सेना ने तेज़तापलट किया था, तो भारत सरकार ने खुट्टा का समर्थन किया था, आंग सान् सू की नेतृत्व वाली लोकतात्रिक ताकतों का खुले तौर पर समर्थन करने से परहेज किया था, जिसने अब इदुविधा में डाल दिया है। भारत के सामने चीन पर अंकुर लगाने की चुनौती है, जो इसलिए खतरनाक है, क्योंकि वह कुछ जातीय समूहों का समर्थन करता है। इस जटिल परिदृश्य में 'द श्री ब्रदरहुड एलायंस' द्वारा दिसंबर 2023 में ऑपरेशन 1027 चलाया गया था, जिसका तां'आंग नेशनल लिबरेशन आर्मी, एए और म्यांमार नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस आर्मी शामिल थी, जिसके जंटा को हिलाकर रख दिया था। जंटा के खिलाफ

जद्वांगल में शिक्षा का पानीपत

इस हमाम म सब नग ह-क्या भाजपा, क्या कांग्रेस। अब कद्राय विश्वविद्यालय के जदरांगल परिसर का संताप वही भाजपा कर रही है, जो इसकी कतरव्हाँती की जिम्मेदार है। नाखून सिफ्क केंट्रीय विश्वविद्यालय के मुद्दे पर नहीं चढ़े, बल्कि हिमाचल में हर सत्ता की टोह में कुर्बानिया थूं ही लिखी जाती है, वरना जिस धर्मशाला में ब्रिटिश विरासत के तहत आजादी के पहले से ही शिक्षा व चिकित्सा के सबसे अव्वल मुकाम लिखे गए, उससे यह साजिश न होती। पहला दौर चिकित्सा का आया और यहां की तत्कालीन विधायक चंद्रेश कुमारी से मिडिकल कालेज की नींव छीन कर जी-एस बाली टांडा ले गए। प्रदेश के बड़े अस्पतालों में शुमार अस्पताल, जो कभी चंबा, ऊना व हमीरपुर के मरीजों को उपचार देता था, उसे धर्मशाला से बाकायदा छीना गया। इसके बाद वीरभद्र सिंह ने केंट्रीय विश्वविद्यालय की सौगंत को धर्मशाला में चिन्हित किया, तो धूमल सरकार ने सियासी वास्तुकला के तहत इसका बोरिया बिस्तर समेता और इस अजबे को अंजाम देने के लिए तत्कालीन

A historical black and white photograph capturing a large-scale public gathering. In the center, a man stands prominently, holding a long staff or pole, possibly a ceremonial or official object. He is surrounded by a dense crowd of people, mostly men, who appear to be of various ages and attire, suggesting a formal or significant occasion. The setting is outdoors, likely on a bridge or a large pier, with structural elements visible in the background.

